संस्कृति का सार है बिहार ! गौरव अपार है बिहार! भारत वर्ष का सबसे गौरव शाली साम्राज्य मगध ढाई हजार साल से मगध की राजधानी पाटलिपुत्र भारत के इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में लिखता है बिहार ! इस धरती ने पहला सम्राट दिया

लिच्छवीं राजाओं नें दुनियाँ का पहला लोकतांत्रिक गणराज्य दिया । यह भूमि है भगवान बुद्ध की । यह भूमि है विश्व अर्हत उपालि की ।

यह धरती ने गरीब -गुरबों के मसीहा बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर को दिया ।

यह भूमि है समाजवाद की । यह भूमि है जननायक कर्पूरी ठाकुर के विचारधारा की ।

तो जानिए - बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को याद रखना क्यों जरुरी है ?

जननायक कर्पूरी जी ऊँचाई के क ई किस्से है । 1952 में पहली बार विधायक बनने के बाद आस्ट्रिया जाने वाले एक प्रतिनिधि मंडल में चयन हुआ ।

उनके पास कोर्ट नहीं था ।एक दोस्त से कोट माँगा गया । वह भी फटा हुआ था ।वही कोट पहन कर यूगोस्लाविया चले गये ।वहाँ का मुखिया मार्शल टीटो ने देखा कि कर्पूरी का कोट फटा हुआ है तो उन्हे नया कोट गिफ्ट किया ।

1974 में कर्पूरी ठाकुर जी के छोटे बेटे का चयन मेडिकल की पढाई के लिए हुआ । लेकिन बीमार होने के कारण राममनोहर लोहिया हाँस्पीटल में ईलाइज हेतु भर्ती करवाया गया था । हार्ट की सर्जरी होनी थी ।इंदिरा गाँधी को जैसे ही पत्ता चला एक राज्य सभा सांसद को भेज कर एम्स में भर्ती कराया गया । दो बार खुद मिलने ग ई । ईलाज के लिए अमेरिका भेजने की पेशकश की ग ई सरकारी खर्च पर । इस बात को कर्पूरी जी को पत्ता चला तो स्पष्ट शब्दों में कह दिये कि बेटे का ईलाज सरकारी खर्च पर नहीं करायेंगें । बाद में जे पी ने पैसा व्यवस्था कर न्यूजीलैण्ड भेजकर ईलाज कराया ।

इसी प्रकार का एक और वाक्यांश है - प्रधानमंत्री चरण सिंह ने कर्पूरी ठाकुर जी से मिलने उनके घर पितोंझिया ग ए ।दरवाजा इतना छोटा था कि चौधरी जी को सिर में चोट लग ग ई ।पश्चिमी उत्तर प्रदेश वाली खाटी शैली में चरण सिंह ने कहा -" कर्पूरी इसको जरा ऊँचा करवाओ । जबाब आया - जब तक बिहार के गरीबों का धर नहीं बन जाता ,मेरा घर बन जाने से क्या होगा ?

अपनी मौत के तीन महीने पहले कर्पूरी जी एक कार्यक्रम में सिरकत करने अलौली गये । वहाँ मंच से वोफोर्स पर बोलते हुए राजीव गाँधी के स्विस बैंक के खाते का जिक्र कर रहे थे ।भाषण के दरम्यान एक पर्ची पर घीरे से लिखकर पुछा कि 'कमल' को अंग्रेजी में क्या कहते है ? लोकदल के तत्कालीन जिला महासचिव हलधर प्रसाद ने उस स्लिप पर ' लोटस ' लिखकर कर्पूरी जी की ओर बढाया और कमल को अंग्रेजी में लोटस वोलते है ।इसी नाम से स्विस बैंक में खाता है राजीव गाँधी का ।

कर्पूरी ठाकुर जब मुख्यमंत्री थे और उनके प्रधान सचिव जशवंत सिन्हा जो वाजपेयी सरकार में वित और विदेश मंत्री बने । किस्सा है कि दोनों एक दिन अकेले में बैठे थे तो कर्पूरी ठाकुर ने यशवंत सिन्हा से कहा- " आर्थिक दृष्टिकोण से आगे बढ जाना । सरकारी नौकरी मिल जाना । इससे क्या यशवंत बाबू आप समझते है कि समाज में सम्मान मिल जाता है ? जो वंचित वर्ग के लोग है , उसको इसी से सम्मान प्राप्त हो जाता है क्या ? नहीं होता । "

आगे उन्होने अपना उदाहरण पेश करते हुए कहा - जब मै मैट्रीक में फस्ट डिवीजन से पास हुए थे ,बाबू जी नाई का काम करते थे ।उन्हे गाँव के एक समृद्ध वर्ग के एक व्यक्ति के पास लेकर ग ए और कहा - सरकार ये मेरा बेटा है , फर्स्ट डिविजन से पास किया है । उस आदमी ने अपनी टांगें टेवल के ऊपर रखते हुए कहा- अच्छा फर्स्ट डिविजन से पास किए हो । मेरा पैर दबाओ ।

इस तरह की तमाम चुनौतीयों का सामना करते हुए कर्पूरी जी ने 1977 में वे दो बारा मुखायमंत्री बने तो एस सी, एस टी के अलावे पिछडा-वर्ग को आरक्षण लागू करने वाला बिहार देश का पहला राज्य बना ।

11नवम्बर 1978 को कर्पूरी जी ने महिलाओं के लिए 3% (इसमें सभी जातियों की महिलाएँ शामिल थी) गरीब सवर्णो के लिए 3% और पिछडों एवं अत्यंत पिछडा-वर्ग के लिए 8+12=20% यानि कुल 26% आरक्षण की घोषणा की । जिसे कर्पूरी फार्मूला कहा जाता है ।

अत्यंत पिछडा-वर्ग में आने वाली जातियाँ एक नजर में -

अनुसूची - 1

कपरिया , कानू ,कलन्दर ,कुर्मी , केवट ,कादर , कोरा , कोरकू , केवर्त ,खटवा , खतौरी , खंगर , खटिक , खेलटा , खतवे ,गोडी ,गंग ई,

गगोता , गंधर्व ,गुलगुलिया ,चांय ,चपोता, चंद्रवंशी (कहार) टिकुलहार ,ढेकारु ,तांती ,तमरिया, तुरहा ,तियर ,धानुक , धामिन , धोमर ,धनवार, नोनिया, नाई (न्यायी) नामशुद्र , पाण्डी ,पाल (गडेरी) प्रधान , पिनगनिया , पहिरा , बारी , बेलदार ,बिन्द , सेखडा ,बागदी , भुईयार , भार , भास्कर ,माली , मांगर ,मदार ,मल्लाह , मझवार ,मारकन्डे , मोरियारी , मलार ,मौलिक ,राजधोबी , राजभर ,रंगवा ,वनपर, सौटा ,संतराश ,अघोरी, अबदल , कसाब , चीक ,डफाली ,धुनिया,धोबी, नट, पमरिया, भठियारा, भाट, मेहतर, साईं ,अमात, चुडुहार, प्रजापति, कुंजरा , नागर, रंगरेज , सिंन्दुरिया, ईटफरोश ।

अनुसूची -2

कागजी, लोहार, कुशवाहा, कोस्ता, गदरी, घटवार, चन उ, जदुपतिया, जोगी , तमोली, तेली ,देवहार ,नालबंद, परचा, बढ ई, बड ई, बनियाँ ,यादव, रोतिया, लहेडी, शिवहरी, सोनार, सूत्रधार,सुकिया, दांगु, कुल्हैया, जट , मलिक ।

बिहार में 24 जनवरी की अहमियत राजनीतिक रुप में कुछ सालों से तेजी से बढ रही है । कर्पूरी ठाकुर के जयंति के बहाने राज्य के मुख्य राजनीतिक दलों में उनकी विरासत पर दाबा की आपसी होड -सी नजर आती है । ऐसे में बडा सवाल ये उभरता है कि आखिर बिहार में जिस नाई (न्यायी) समाज की आबादी 4% से भी कम है उस समाज के सबसे बडे नेता कर्पूरी ठाकुर राजनीतिक विरासत के लिए इतनी हाय -तौबा उनके निधन के 32 साल बाद क्यों मच रही है ।

इसकी सबसे बडी वजह तो यही है कि कर्पूरी ठाकुर जी की टहचान अति-पिछडा वर्ग (EBC) के बडे नेता की बना दी ग ई है । छोटी -छोटी आबादी वाली विभिन्न जातियों के समुह EBC में 100 से ज्यादा जातियाँ शामिल है ।

इसमें भले अकेले कोई जाति चुनावी समीकरण के लिहाज से महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन सामूहिक तोर पर ये 29% वोट बैंक बनाती है । वास्तविकता यह हैकि मंडल कमीशन लागू होने से पहले कर्पूरी ठाकुर बिहार की राजनीति में वहाँ तक पहूँचे जहाँ उनके जैसी पृष्ठभूमि से पहूँचना असम्भव ही था ।वे बिहार की राजनीतिक पृष्ठभूमि पर गरीब - गुरबों की सबसे बडी आवाज बनकर उभरे थे ।

उपेन्द्र प्रसाद